विश्व न्याय मन्दिर

रिज़वान 2012

विश्व के बहाईयों के प्रति

परमप्रिय मित्रों!

आज से सौ साल पहले, रिज़वान उत्सव के ग्यारहवें रोज, दिन के तीसरे प्रहर के मध्य, सैकड़ों श्रोताओं की मौजूदगी में, अब्दुल-बहा ने एक कुल्हाड़ी उठाई और शिकागो की उत्तर दिशा में, ग्रॉस प्वाइंट के मन्दिर स्थल को आच्छादित करने वाली तृणभूमि को भेद डाला। उस समय, बसन्त ऋतु के उस दिन, उनके साथ भूमि के उपयोग का सूत्रपात करने के लिए आमंत्रित लोगों में शामिल थे अनेक पृष्ठभूमियों से आए हुए लोग -- नॉर्वे के निवासी, भारतीय, फ्रांसीसी, जापानी, फारस के लोग और अमेरिका के जनजातीय लोग तथा और भी अनेक। ऐसा लग रहा था मानों अभी तक अनिर्मित उपासना मन्दिर प्रिय मास्टर की उन इच्छाओं को पूरा कर रहा था जो उन्होंने उस उत्सव के अवसर पर ऐसे सभी भवनों के संदर्भ में प्रकट की थीं -- “जो मानवजाति के लिए एक मिलन-स्थल बन सकें” और “जिसकी पावनता के खुले प्रांगण से मानवजाति की एकता की घोषणा का संचार होगा”।

उस समय उनके जो श्रोता थे और वे तमाम लोग जिन्होंने मिस्र (इज़िप्ट) और पश्चिमी देशों की उनकी यात्राओं के क्रम में उनकी बातों को सुना था, वे समाज तथा उसके मूल्यों और कार्य-व्यवसायों के संदर्भ में अब्दुल-बहा के शब्दों के दूरगामी अभिप्रायों को स्पष्ट रूप से शायद ही समझ पाए थे। बहाउल्लाह के प्रकटीकरण द्वारा भविष्य में समाज का जो स्वरूप नियत है, उसकी सुदूर और अस्पष्ट रूपरेखा की झलक के सिवा और कुछ देख पाने का दावा क्या आज भी कोई व्यक्ति कर सकता है? किसी भी व्यक्ति को यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि ईश्वरीय शिक्षाएँ मानवजाति को जिस सभ्यता की दिशा में प्रेरित करते हुए ले जा रही हैं उस सभ्यता का जन्म वर्तमान युग की व्यवस्थाओं से केवल तालमेल बिठाकर हो जाएगा। बल्कि सच्चाई इससे कोसों दूर है। पश्चिम के मातृ उपासना मन्दिर की आधारशिला रखने के कुछ ही दिनों बाद दिए गए एक व्याख्यान में अब्दुल-बहा ने कहा था कि “आध्यात्मिक शक्तियों के प्रकटीकरण के परिणामों में से एक यह होगा कि मानव जगत स्वयं को एक नए सामाजिक स्वरूप के अनुकूल बना लेगा“ और यह कि “सभी मानवीय व्यवहार में ईश्वर का न्याय प्रकट हो उठेगा।” अब्दुल-बहा की ये तथा ऐसी ही अन्य कई वाणियों से, जिनकी ओर बहाई समुदाय इस शताब्दिक अवधि में बार-बार अभिमुख हो रहा है, उस दूरी के बारे में जागरूकता उत्पन्न हो रही है, जो वर्तमान व्यवस्था वाले समाज को, उस महान विचारदृष्टि से अलग कर रही है जो उनके ‘दिव्य पिता’ ने इस संसार को प्रदान की थी।

आह, हर जगह समाज की दशा को बेहतर बनाने के लिए नेक इरादे से सम्पन्न व्यक्तियों के प्रशंसनीय प्रयासों के बावजूद, कई लोगों को ऐसा लग रहा है कि इस विचार-दर्शन को साकार होने से रोकने वाली बाधाओं से पार पाना बड़ा मुश्किल है। मानव स्वभाव के बारे में व्याप्त उन भ्रांतिपूर्ण अवधारणाओं के आगे, जो एक स्थापित सत्य के रूप में अपनी जड़ें जमा चुकी हैं, उनकी आशाएँ चकनाचूर हो जाती हैं। इन अवधारणाओं में उन आध्यात्मिक क्षमताओं के अपार भण्डार के बारे में जरा भी विचार नहीं किया गया है जो उन पर निर्भर रहने वाली किसी भी प्रकाशित आत्मा के लिए उपलब्ध हैं। इसके बजाय वे मानवता की असफलताओं के आधार पर, जिनके उदाहरण हर रोज हमारी निराशा को बढ़ाते ही जा रहे हैं, अपना औचित्य सिद्ध करती हैं। इस तरह, कई झूठें आधारों के परत-दर-परत आवरण तले एक बुनियादी सच ढक गया है: यह कि दुनिया की स्थिति मानव की चेतना में आई विकृति को झलका रही है न कि उसकी अनिवार्य प्रकृति को। हर ईश्वरीय अवतार का उद्देश्य आंतरिक जीवन और मानवजाति की बाहरी दशाओं दोनों में रूपान्तरण लाना होता है, और यह रूपान्तरण, सहज रूप से, लोगों के एक विकसित होते समुदाय के रूप में घटित होता है, जो दिव्य शिक्षाओं के आधार पर एकसूत्रता में बँधे होते हैं और जो सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में अपना योगदान देने के लिए आध्यात्मिक क्षमताओं के विकास के लिए सामूहिक रूप से प्रयत्नशील होते हैं। सौ साल पहले, प्रिय मास्टर द्वारा कठोर धरती पर जिस तरह कुठाराघात किया गया था, कुछ उसी तरह से वर्तमान समय के मौजूदा सिद्धान्त प्रारम्भ में बड़ी मुश्किल से बदलने योग्य लग सकते हैं, लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि एक दिन वे मिट जाएँगे और “ईश्वरीय कृपा की बासन्ती फुहारों” के माध्यम से “सच्चे ज्ञान के फूल” सुन्दर और तरोताजा होकर खिल उठेंगे।

हम ईश्वर के प्रति आभारी हैं कि उसकी वाणी की शक्ति से आप -- अर्थात् उस प्रभु के महानतम नाम के समुदाय -- ऐसे वातावरण के सृजन में जुटे हुए हैं जिसमें सच्चा ज्ञान खिल उठेगा। यहाँ तक कि वे लोग भी जो आज प्रभुधर्म के लिए कालकोठरी की सजा भुगत रहे हैं, अपने अवर्णनीय बलिदान और दृढ़ता के माध्यम से सहानुभूति भरे हृदयों में “ज्ञान और विवेक का सम्बुल पुष्प” खिलाने में सफल हुए हैं। पूरी दुनिया में, पाँच वर्षीय योजना के प्रावधानों को कार्यरूप देते हुए, उत्सुक लोग एक नई दुनिया के निर्माण के कार्य में जुटे हुए हैं। इस योजना की प्रमुख विशेषताओं को इतनी अच्छी तरह से समझ लिया गया है कि यहाँ हम उस पर आगे और कुछ कहने की आवश्यकता महसूस ही नहीं करते। उस ‘सर्वदयालु शुभंकर’ की देहरी पर हमारी तो बस यही प्रार्थना है कि योजना की प्रगति में अपना योगदान देने के क्रम में आपमें से हर व्यक्ति को परमोच्च स्वर्ग के सहचरों की सहायता प्राप्त हो। पिछले वर्ष के दौरान आपके पुनीत प्रयासों को देखते हुए और उनसे सशक्त होकर हमारी यह उत्कट कामना है कि अपने अनुभवों के माध्यम से आप जो ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं, उसे

कार्यरूप देने के लिए आप अपने दृढ़ प्रयासों को और अधिक गहन बनाएँगे। अब रुकने का समय नहीं है। नए प्रभात के बारे में अभी बहुत से लोगों को पता नहीं है। यह दिव्य सन्देश आप नहीं देंगे तो कौन देगा? प्रभुधर्म की ओर संकेतित करते हुए बहाउल्लाह ने कहा है: "ईश्वर की सौगन्ध! यह अन्तर्दृष्टि और अनासक्ति का, दूरदर्शिता और आगे बढ़ने का कार्यक्षेत्र है। सर्वकृपालु प्रभु के वीर अश्वारोहियों के सिवा, जिन्होंने अस्तित्व के संसार से अपनी हर मोह-माया तोड़ ली है, यहाँ और कोई भी अपना घोड़ा नहीं दौड़ा सकता।"

पूरे बहाई विश्व को अपने कार्य में जुटे हुए देखना वस्तुतः एक उज्ज्वल परिदृश्य को निहारने जैसा है। किसी भी व्यक्तिगत अनुयायी के जीवन में, जिसकी सबसे बड़ी अभिलाषा है अन्य लोगों को अपने सृष्टिकर्ता के सत्संग में आमंत्रित करना तथा मानवजाति की सेवा, उस आध्यात्मिक रूपान्तरण के संकेत देखे जा सकते हैं, जो इस युग के प्रभु ने हर किसी के लिए चाहा है। किसी भी बहाई समुदाय द्वारा अपने समुदाय के युवा और वयोवृद्ध हर तबके के लोगों और साथ ही अपने मित्रों और सहयोगियों में सामान्य कल्याण के कार्य के लिए क्षमता के विकास के लिए चेतना को स्पन्दित करने वाले जो प्रयास किए जा रहे हैं, उनमें इस संकेत की झलक देखी जा सकती है कि दिव्य शिक्षाओं पर आधारित कोई भी समाज किस तरह अपना विकास कर सकता है। और उन विकसित क्लस्टरों (क्लस्टर्स) में जहाँ योजना की रूपरेखा द्वारा प्रशासित कार्यकलाप प्रचुर मात्रा में चलाए जा रहे हैं, और जहाँ विभिन्न गतिविधियों के बीच आपसी सामंजस्य की माँग बढ़ती जा रही है, वहाँ की विकसित हो रही प्रशासनिक संरचनाएँ आशा की एक किरण झलका रही हैं -- भले ही यह किरण थोड़ी धुँधली क्यों न हो -- कि मानवजाति के कल्याण और विकास को आगे बढ़ाने के कार्य में प्रभुधर्म की संस्थाएँ किस प्रकार, नित बढ़ती हुई परिपक्वता के साथ, अपना वृहत्तर दायित्व निभाएँगी। अतः यह स्पष्ट है कि व्यक्तियों, समुदायों और संस्थाओं के विकास की अपार आशाएँ बँधी हुई हैं। लेकिन इससे भी बढ़कर, इन तीनों को जोड़ने वाला आपसी सम्बन्ध जिस प्रकार से अत्यधिक स्नेह और आपसी सहयोग की भावना झलकाने लगा है, यह देखकर हमें विशेष हर्ष होता है।

इसके ठीक विपरीत, बाकी संसार में इन तीन समरूप कार्यवाहकों -- अर्थात् आम नागरिक, राजनैतिक तंत्र और समाज की संस्थाओं -- के बीच आपसी सम्बन्धों में ऐसा वैमनस्य झलकता दिख रहा है जो मानवजाति के परिर्वतन की दिशा में एक उथल-पुथल भरे दौर का परिचायक है। एक सहज और अखण्ड व्यवस्था के परस्पर-निर्भर अंगों के रूप में काम करने को अनिच्छुक ये तीनों तत्व सत्ता के संघर्ष में लिप्त हैं जो अन्ततः निरर्थक सिद्ध होता है। इससे उलट, अपनी असंख्य पातियों और वार्ताओं में अब्दुल-बहा ने कितने भिन्न समाज की परिकल्पना प्रस्तुत की है -- जिसमें दैनिक अभिक्रियाएँ और राज्यों के आपसी

सम्बन्ध मानवजाति की एकता के बोध से रूपायित हैं। इस प्रकार के बोध से सम्पन्न आपसी सम्बन्ध की भावना, पूरी दुनिया में, गाँवों और आस-पड़ोस में रहने वाले बहाईयों और उनके मित्रों द्वारा विकसित की जा रही है। उनसे पारस्परिकता और सहयोग, प्रेम और सहमति की सुरभि के प्रसार का अनुभव किया जा सकता है। ऐसे ही विनम्र परिवेश में समाज के चिर-परिचित संघर्ष का एक विकल्प उभरता दिख रहा है। अतः यह स्पष्ट है कि कोई भी व्यक्ति जो जिम्मेवार तरीके से अपने आपको अभिव्यक्त करना चाहता है वह सामान्य हित के लिए समर्पित परामर्श की प्रक्रिया में विचारपूर्वक भाग लेगा और अपनी व्यक्तिगत राय पर अड़े रहने के लोभ में नहीं पड़ेगा। सार्थक उद्देश्यों की दिशा में, संयोजित प्रयासों के महत्व की आवश्यकता को महसूस करने वाली, कोई भी बहाई संस्था लोगों पर नियंत्रण करने का उद्देश्य लेकर नहीं चलती बल्कि उस समुदाय को पोषित और प्रोत्साहित करने के इरादे से चलती है। जो समुदाय अपने विकास का दायित्व लेना चाहता है एवं संस्थाओं द्वारा संकल्पित योजनाओं में, सम्पूर्ण हृदय से भाग लेने से प्राप्त एकता में एक अमूल्य सम्पदा का अनुभव करता है। बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के प्रभाव से, इन तीनों के बीच का सम्बन्ध नई गर्मजोशी और जीवन्तता से सम्पन्न होने लगा है। कुल मिलाकर, वे एक ऐसा साँचा तैयार कर रहे हैं जिसमें दिव्य प्रेरणा की छाप लिए हुए एक वैश्विक आध्यात्मिक सभ्यता क्रमशः परिपक्व हो रही है।

इस प्रकटीकरण का प्रकाश मानवीय प्रयासों के हर पहलू को आलोकित करने जा रहा है। इनमें से प्रत्येक पहलू में समाज को स्थायित्व देने वाले सम्बन्ध को नए सिरे से ढाला जाएगा, प्रत्येक में संसार यह नमूना देखना चाहता है कि मनुष्य को एक-दूसरे के प्रति कैसा होना चाहिए। हाल के दिनों में अनेक लोगों को उलझाकर रख देने वाली खलबली को जन्म देने में उसकी सुस्पष्ट भूमिका को देखते हुए, हम आपके विचारार्थ प्रस्तुत करते हैं मानवजाति के आर्थिक जीवन का पक्ष जिसमें अन्याय को बड़ी उदासीनता के साथ झेल लिया जाता है और अनुपात से अधिक लाभ को सफलता का पैमाना समझ लिया जाता है। ऐसी ध्वंसात्मक मनोवृत्तियाँ इतनी गहरी जड़ें जमा चुकी हैं, कि इस क्षेत्र में सम्बन्धों को संचालित करने वाले मौजूदा रिवाज़ों को कोई एक व्यक्ति भला कैसे बदल सकता है इसकी कल्पना भी कठिन है। लेकिन फिर भी कुछ ऐसी कार्य-प्रथाएँ हैं जिनसे कोई भी बहाई परहेज़ करेगा, जैसे लेनदेन में बेईमानी या दूसरों का आर्थिक शोषण करना। ईश्वरीय शिक्षाओं का निष्ठापूर्वक पालन करने का तकाजा है कि किसी व्यक्ति के आर्थिक कार्य-व्यवहार और उसकी बहाई मान्यताओं के बीच परस्पर विरोधाभास नहीं होना चाहिए। अपने जीवन में अच्छाई और औचित्य से सम्बन्धित सिद्धान्तों को लागू करके एक अकेला व्यक्ति एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत कर सकता है, जो दुनिया के निम्न मापदण्डों के मुकाबले ऊँचा, बहुत ऊँचा, हो। मानवता इस बात से हताश है कि उसके सामने जीवन का ऐसा कोई ढाँचा ही नहीं है जिससे वह आशान्वित हो सके।

ऐसे में हमारी दृष्टि आप पर केन्द्रित है कि आप ऐसे समुदायों को सम्पोषित करेंगे जिनके तौर-तरीकों से दुनिया को एक नई आशा मिल सके।

अपने रिज़वान सन्देश 2001 में, हमने यह संकेत दिया था कि ऐसे देशों में जहाँ 'समूहों द्वारा प्रवेश की प्रक्रिया' पर्याप्त रूप से आगे बढ़ चुकी हो तथा जहाँ राष्ट्रीय समुदायों की स्थितियाँ अनुकूल हों, वहाँ हम राष्ट्रीय स्तर पर उपासना मन्दिर की स्थापना को स्वीकृति देंगे, जिनका अभ्युदय प्रभुधर्म के रचनात्मक युग के पाँचवें काल की विशिष्टता का परिचायक होगा। अत्यधिक प्रसन्नता के साथ अब हम यह घोषणा करते हैं, कि दो देशों में राष्ट्रीय मशरिकुल-अज़्कार निर्मित किए जाएँगे -- कांगो गणतंत्र और पापुआ न्यू गिनी में। इन देशों के लिए हमने जो मापदण्ड स्थापित किए थे वे उन पर खरे उतरे हैं और योजनाओं की वर्तमान श्रृंखलाओं से उत्पन्न सम्भावनाओं के प्रति, वहाँ के लोगों की प्रतिक्रियाएँ उल्लेखनीय रही हैं। सांतियागो में जहाँ एक ओर महाद्वीपीय उपासना मन्दिरों में से अन्तिम उपासना मन्दिर का निर्माण कार्य जारी है, वहीं दूसरी ओर इन राष्ट्रीय उपासना मन्दिर परियोजनाओं का शुरु होना इस बात का एक अन्य संतोषदायक प्रमाण है कि ईश्वर का धर्म समाज की माटी में गहराई से पैठता जा रहा है।

एक और चरण सम्भव है। मशरिकुल-अज़्कार जिसका वर्णन अब्दुल-बहा ने "संसार की सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्थाओं में से एक" कहकर किया है, बहाई जीवन के दो अनिवार्य और अविभाज्य पक्षों को एक सूत्र में पिरोता है -- उपासना और सेवा। इन दोनों की एकसूत्रता योजना की समुदाय-निर्माण सम्बन्धी विशेषताओं में स्थित संयोजन में भी झलकती है, विशेषकर भक्तिपरक चेतना के तेजी से होते विकास में, जिसकी अभिव्यक्ति प्रार्थना सभाओं और उस शैक्षणिक प्रक्रिया के माध्यम से होती है जिससे मानवजाति की सेवा के लिए क्षमता का निर्माण होता है। उपासना और सेवा का सह-सम्बन्ध विशेषकर दुनिया के उन क्लस्टरों में प्रतिध्वनित होता है, जहाँ के बहाई समुदायों का आकार और उनकी जीवन्तता काफी विकसित हो चली है, और जहाँ सामाजिक क्रियाकलापों में भागीदारी साफ़ झलकने लगी है। इनमें से कुछ समुदाय ज्ञान के प्रसार के स्थल के रूप में तय किए गए हैं, ताकि उनसे जुड़े हुए क्षेत्रों में किशोर युवा कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में मित्रों की क्षमता का पोषण किया जा सके। जैसा कि हमने हाल ही में संकेत दिया है, इस कार्यक्रम को स्थायित्व देने की क्षमता अध्ययनवृत्त कक्षाओं और बच्चों की कक्षाओं के विकास को भी उर्जा प्रदान करती है। इस प्रकार अपने मुख्य लक्ष्य से भी आगे बढ़कर ये ज्ञान का स्थल (लर्निंग साईट) विस्तार और सुगठन की सम्पूर्ण योजना को ही मजबूती प्रदान करता है। आने वाले वर्षों, में ऐसे ही समुदायों में स्थानीय मशरिकुल-अज़्कार के अभ्युदय के बारे में विचार किया जा सकता है। 'पुरातन सौन्दर्य' के प्रति अत्यधिक आभार भरे हृदय से, आपको यह सूचित करते हुए हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है कि निम्नांकित क्लस्टरों में प्रथम स्थानीय बहाई उपासना

मन्दिर के निर्माण के सम्बन्ध में हम सम्बन्धित राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं के साथ परामर्श शुरु करने जा रहे हैं: बैटमबांग (कम्बोडिया), बिहार शरीफ (भारत), माटुंडा सोय (केन्या), नॉर्टे डेल कॉसा (कोलम्बिया), और तान्ना (वैनुवाटु)।

दो राष्ट्रीय और पाँच स्थानीय मशरिकुल-अज़कारों के निर्माण कार्य में सहायता देने के लिए हमने बहाई विश्व केन्द्र में एक मन्दिर कोष की स्थापना का निर्णय लिया है, जिससे ऐसी सभी परियोजनाओं को लाभ मिल सकेगा। सभी जगहों के मित्रों को आमंत्रित किया जाता है कि वे अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुसार इसमें त्यागपूर्वक दान दें।

प्रिय साथियोंः आज से सौ साल पहले अब्दुल-बहा ने जो पहल की थी, वही पहल एकबार फिर सात और देशों में की जानी है। लेकिन यह, उस दिन की पूर्वभूमिका होगी जबकि हर शहर, हर गाँव में, बहाउल्लाह के आदेश का अनुपालन करते हुए, प्रभु की उपासना के लिए एक भवन खड़ा किया जाएगा। ईश्वर के स्मरण के उन उदयाचलों से ‘उनके’ प्रकाश की किरणें विकीर्ण होंगी और ‘उनकी’ स्तुति के गान गुंजित हो उठेंगे।

-विश्व न्याय मन्दिर